(18)

१/८०
२/८०
३/८०
६/८८
७/८०

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	**Hoshiarpur**
Date of Publication	**10th of every month**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Publisher's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Editor's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.**
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, M. R. Bhagat hereby decclare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 7-8-79 *Signature of Publisher*

Printed and Published by M. R. Bhagat at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

परमसन्त, परमदयाल

फकीर चन्द जी महाराज

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष 6	वीरवार 10 जनवरी, 1980	संख्या 9

मानवता मन्दिर की नई दुकान के सौदे

सत्संग हज़ूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 23-9-79

चल सतगुरु की हाट जान बुधि लाईये ।
कीजे साहव से हेत, परम पद पाईये ।। १
सतगुरु सब कुछ दीन्ह देत, कछु न रहयो ।
हम भी अभागिनि नारि, सुख तज दुख लहयो ।। २
गई पिया के महल, पिया संग ना रची ।
हिरदे कपट रहयो छाय, मान लज्जा भरी ।। ३
जहवां गेल सिलहली, चढ़ा गिरि गिरि पड़ूं ।
उठहुँ सम्हारी सम्हारि, चरण आगे धरुं ।। ४
जो पिया मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है ।
अधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है ।। ५

भला बना संजोग, प्रेम का चोलना।
तन मन अरपों सीस, साहेब हंस बोलना ॥ ६

जो गुरु रुठे होंय, तो तुरत मनाइये।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥ ७

जो गुरु होय दयाल, दया दिल हेरी है।
कोटि करम कट जायं, पलक छिन फेरि है ॥ ८

कहें कबीर समझाय, समझ हिरदे धरो।
जुगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो ॥

राधास्वामी

मैं सदैव कहा करता हूं कि मैं ये काम क्यों करता हूं। मैं हिन्दू के घर पैदा हुआ, ब्राह्मण था, राम कृष्ण, परमेश्वर, देवी देवताओं को मानने वाला था। जैसे मैं कहा करता हूं, मेरी किस्मत मुझे दाता दयाल शिव व्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे सँत मत या गुरुमत दे दिया। जब इनकी पुस्तकें पढ़ीं, इन में सब का खन्डन था स्वामी जी ने और कबीर साहेब ने वेदांत को और सब को काल और माया मत में कहा। इन्होंने सब की ऐसी की तैसी फेरी हुई है, सन्त मत को बड़ा कहा जो कुछ है गुरुमत है। क्योंकि दाता दयाल से

मेरा विश्वास टूटा नहीं। उस समय मैं ने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और दाता ने कहा था चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना। तो मैं जो कुछ करता हूं किसी पर मेरा कोई एहसान नहीं है मैं अपना कर्म भोगता हूं। क्योंकि मैं ने प्रण किया था, जिस का जैसा ख्याल होता है वैसा उसका हाल होता है। मैंने प्रण किया था, मे अपने ही किये में फंस गया। आज मैं कबीर साहब की बाणी सुनाता हूं कि वह गुरुमत क्या है, गुरुमत क्या कहता है, गुरु क्या करता है, कहाँ पहुंचाता है और गुरु क्यों करना चाहिये ? क्या यह ठीक है कि गुरु ही सब कुछ है और सब गलत हैं ? यह प्रश्न सब मेरे अन्तर में थे। मेरे तो वे हल हो गये मगर अफसोस कि जिस मंज़ल का मैंने अनुभव किया था मैं अभी तक वहां स्थाई रूप में २४ घण्टे ठहर नहीं सकता, ये सच्ची बात आप को बताता हूं। क्यों नहीं ठहर सकता ? क्योंकि दुनियां के कारोबार साथ हैं। कुछ घर का और कुछ मन्दिर का सियापा मेरे गले पड़ा हुआ है। मैं इस को सियापा ही गिनता हूं और सब से अधिक सिया। इन सत् सँगियों का है जो बात को समझते नहीं हैं। कोई कहता है

मेरे पुत्र नहीं है, कोई कहता है विवाह नहीं हुआ, कोई कहता है ये नहीं है, कोई कहता है वो नहीं है। सिवाये दुनियां के दुःखों को लिए हुए और कोई मेरे पास आता नहीं। चिट्ठियां भी आती हैं तो दुखों की भरी आती हैं। जो असली बात है उसे कोई नहीं सुनता। मगर खैर, मेरा कर्म भोग है। हो सकता है, मैंने जो कुछ समझा है, सारा ग़लत हो। मगर मेरी नीयत साफ़ है और मैं जो कुछ कहता हूं अपना आजमाया हुआ कहता हूं। कबीर साहब कहते हैं :-

चल सत् गुरु की हाट ज्ञान बुधि लाईये
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाईये

कबीर साहब कहते हैं सत्गुरु ने दुकान लगाई है। वहां से ज्ञान और बुद्धि का सौदा ले लो। गुरु इस कारण किया जाता है। जब ज्ञान और बुद्धि मिल जायेगी तब तुम उस ईश्वर से या उस साहेब से प्रेम करने के योग्य बनोगे। अगर तुम को पहले ज्ञान और बुद्धि नहीं मिली, लाख तुम राम राम, ईश्वर ईश्वर या परमात्मा परमात्मा जापते रहो तुम कामयाब नहीं हो सकते। जिस प्रकार इन्जिन का काम होता है, अगर कोई इन्जिन को फिट करना

नहीं जानता तो वो चलायेगा क्या ? इस वास्ते गुरु जरूरी है । ताकि वह तुम को बुद्धि दे ज्ञान दे ।

बुद्धि कैसे मिलती है ? ठीक बुद्धि प्राप्त करने के लिए व देने के लिए गुरुओं ने क्या कहा है ? एक तो मगर सत्संग में भी बुद्धि पूरी काबू नहीं आती, इस लिए गायत्री मन्त्र दिया है । ओम् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेणेयं भर्गोदेवस्य धी महि, धियो योनः प्रचोदयात् । इस गायत्री मन्त्र का अर्थ ये है कि जाग्रत, स्वप्न, सुषप्ति के परे तुम्हारे अन्तर सूर्य है उसके दर्शन करो । वह तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक होगा और संतों के हां भी यही है । अभ्यास करके ज्योति स्वरूप के दर्शन करो । जब तुम अपने अन्तर में इकट्ठे हो जाओगे और रौशनी यानी प्रकाश के दर्शन करोगे तो तुम्हारा दौरा खून दिमाग में खास खास cells के बीच में से जावेगा और दबे हुए वे cells खुल जायेंगे तो तुम में बुद्धि पैदा होगी । अब बुद्धि कई प्रकार की है । इजिनियरिंग की बुद्धि, डाक्टरी की बुद्धि, एटम बम बनाने की बुद्धि । एक जीवन में सुखी रहने की बुद्धि है जो साधु और महात्मा बनाते हैं । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं

तुम को क्या बुद्धि मिली ? दूसरों को तू क्या बताना चाहता है ?

मैं पंथ में आया तो इन्हों ने सब से बढ़ कर ये कहा कि अपने आप को पहचानो। जब तक अपने आप को तुम नहीं जान सकते, तुम मालिक को भी नहीं जान सकते, इसी वास्ते गुरु नानक साहब ने कहा है :—

कहे नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भरम की काई

स्वामी जी ने कहा है :-

आप आप को आप पहचान, कहा और का नेक ना मानो।

जो आदमी अपने आप को नहीं पहचान सकता वह ईश्वर परमेश्वर को भी नहीं याद कर सकता। ज़वानी बेशक शब्द गा कर सुनादे। वह बुद्धि क्या है जो मुझ को मिली ? वह बुद्धि यह मिली है कि मैं कौन हूं।

ज़ाहरा हम और तुम जितने आदमी हैं, सब मां के पेट से आये हैं। हम और तुम सब आए तो आसमान से उतर कर हैं मगर मां के पेट के रास्ते से निकल कर आये हैं। कहो आये हैं या नहीं आये

हैं । मां के पेट में बाप के वीर्य्य का एक कीड़ा था, जो उसके रहम के अन्दर गया और जो मां ने खुराक खाई है उस से वह बड़ा हुआ । तो प्रकट रूप में हम एक शुक्राणु (spermatozoa germ) थे । जो खुराक खा खा कर पलता पलता अब हम कहां ५ या ६ फुट के जवान हो गये अब कोई प्रधान मन्त्री बन गया कोई कुछ बन गया, अब अगर तुम सच्ची बुद्धि प्राप्त करना चाहो और ये देखना चाहो कि तुम कौन हो या तुम पहले क्या थे ये तो पहले अपने आप को उल्ट कर देह को और देह के सारे विचारों को और मन के विचारों को भूल कर निर्लिप्त समाधि या दसवें द्वार में उस कीड़े की हालत में ले जाओ यानी पहले उस हालत में आओ जहां तुम को ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियों का ख्याल न आने पाये । इसी वास्ते सन्तों ने हम को ये नाम का साधन दिया है अगर हम ऐसा करना चाहें तो

दूसरी बुद्धि मुझे यह प्राप्त हुई कि वीर्य्य ही हमारी सारी जीवन की ताकत है । चालीस बूंद खून से एक बूंद ओजस बनता है और चालीस बूंद ओजस से एक बूंद वीर्य्य बनता है । जो आदमी

अपनी छोटी आयु में हाथ रसी करके या लड़कियों के पीछे फिर के या छोटी आयु में शादी होने से वीर्य्य नाश करता रहता है वह अपने आप को कभी जान ही नहीं सकता। तो सब से बड़ी बुद्धि जो मैंने हासिल की है वो यह है कि अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो। ग़लत तरीके से अपने वीर्य्य को बरबाद मत करो, केवल सन्तान के लिए उस का प्रयोग कर सकते हो। इस बुद्धि से मुझे बहुत लाभ हुआ, गो जब मेरी भी बुद्धि ठिकाने नहीं थी तब मैं भी गिरा था, हालांकि उस समय में दाता दयाल का प्रेमी बना हुआ था। जब मैं दाता के दरबार में जाता तो वो कहते बुलाओ उस बावले फकीर को। मैं उस समय समझता था कि मुझे बड़े प्रेम से बुलाते हैं जिस तरह हम बच्चों को बुलाते हैं। तो मैं खुश हुआ करता था कि मुझे बड़े प्रेम से बुलाते हैं मगर इतनी आयु के पश्चात आज मैं कहता हूं कि मैं असलीयत में बावला था और बावला होने का कारण तेरह वर्ष की आयु में मेरी शादी का होना था। साढे १६ वर्ष की आयु में मैं गृहस्थ में फंसा। ये है दूसरी बुद्धि जो मुझ को मिली। आज शब्द था :-

चल सतगुरु की हाट ज्ञान बुद्धि लाइये,
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये।

मैंने गुरु की आज्ञा से और अपनी ज़मीर को समझ कर क्योंकि अपने आप को सँत सत्गुरु वक्त कह कर संसार में प्रगट किया है और शप्थपूर्वक घोषणा की है और किताबों में लिखता हूं। क्योंकि सतगुरु कोई खुदा नहीं है। सच्चे ज्ञान का, सच्चे अनुभव का नाम सत्गुरु है। इस समय के अनुसार जो असली शिक्षा है वो देता हूं। तो मेरी क्या ड्यूटी है ? आप लोगों को सत् बुद्धि बताना ज्ञान देना। जब तक तुम को बुद्धि और ज्ञान की जानकारी और अप आमिल नहीं हो, लाख तुम कोशिश करो कि तुम उस मालिक या अपने आद घर तक पहुंच जाओगे, नहीं पहुंच सकते। यह बिल्कुल लाख रु० की बात है। तो वह बुद्धि मुझे क्या मिली ? आदमी के मन के अन्दर बड़ी ताकत है, अगर उस को साफ कर लिया जावे। इस मन को ठीक करने की कोशिश करो। ये ठीक कब रहेगा ? जब तुम्हारा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य ठीक रहेगा। यह तुम्हारी अशांति का सब से पहला कारण है जो मेरे पास अधिक अशाँत आते है वह ये होता है कि उन

का मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरा हुआ होता है। मेरे पास रोज़ चिट्ठियां आती हैं। दूसरा कारण उनकी आर्थिक कठिनाई होती है। तो मैंने क्या बुद्धि समझी ? गुरु के दरबार में जाकर अपना मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखो। दूसरे हम दुनियां में रहते हैं। तुम देखो आज कल धान, पशु और पक्षियों की विशेष प्रकार की नसलें बिज्ञान से पैदा की जा रही हैं मगर ये नहीं कोई सोचता कि हम सन्तान को कैसे पैदा करें। हमारी सब को सन्तान जो है ये खुदरौ है अर्थात बिना जरूरत पैदा हुई है। क्योंकि सन्तान के पैदा करने के नियम को आदमी भूल जाता है। हम लोग ये समझते हैं कि औरतें विषय का साधन हैं और शायद औरतें भी समझती हों कि आदमी उन के विषय का साधन हैं, ये उन को पता होगा। क्योंकि मैं औरत तो हूं नहीं जो औरत के जज़्बात रखूँ। आदमी के जज्बात मैं जानता हूं। जब इन्सान अपने विषय के लिए शराब पीकर या गलत ख्याल ले कर स्त्री पुरुष भोग करते हैं। तो जो सन्तान पैदा होगी वो बिना बुलाय होगी। आप कभी आशा न रखो कि वह सन्तान तुम्हारे लाभ के लिए काम करेगी।

कभी नहीं करेगी, कभी नहीं करेगी, कभी नहीं करेगी उस में कोई न कोई खराबी होगी, तुम्हारे हमारे दुख हैं क्या कोई मुझे बताओ तो सही सुखी है ? कोई सन्तान से, कोई भाग्यवान आदमी ही है जो सुखी है वरना किसी को कोई शि. ायत है; किसी को कोई है। हम लोग सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा नहीं करते। खुदरौ सन्तान पैदा होती है। मां बाप भी पीछे से दुखी होते हैं, और आप हम भी दुखी होते हैं। तो जिस चीज़ की बीज और बुनयाद खराब है। मकान की बुनयाद ही कमज़ोर है तो मकान बनाओगे तो क्या होगा ? बन नहीं सकता, यह एक ज्ञान और बुद्धि है जो मैं ने सीखी है। आज कल की सन्तान देख लो, जितने हैं ये अपने काबू में नहीं हैं अपनी मर्ज़ी करते हैं। उनका क्या कसूर है, मां बाप ने जैसा बनाया बन गए। कसूरवार कौन है ? तुम, अगर किसी का लड़का ख़राब है, ग़लती खाता है, तो मैं तो उसके मां बाप को ही कसूरवार कहूंगा कि तुम जुम्मेवार हो। क्योंकि मैं ने आज़मा के देखा है। मैंने नियमानुसार लड़का पैदा किया। खुदरौ सन्तान मैंने भी पैदा ... भी इस से बरी नहीं, मगर उस वक्त मु...

पता नहीं था परन्तु मालिक ने मुझ पर दया की कि जो खुदरौ सन्तान पैदा हुई वह मर गई। मालिक का शुक्र है जो लड़का नियम के अनुसार मैंने पैदा किया, आप हैरान होंगे वह इतना नेक है कि पौने तीन हजार रु० वेतन लेता है। मेरे साथ बातें करता हुआ मेरे सामने आंख से आंखे नहीं मिलाता। यहां आता है तो मेरी रक्षा पर नहीं चढ़ता। मेरा नौकर है, वह अगर रोटी देता है, उसके झूठे बर्तन उठाना चाहता है तो वह कहता है नहीं, आप पिता जी के आदमी हैं, आप मेरे झूठे बर्तन नहीं उठा सकते। आप ही उठाकर अन्दर रख देता है। ये मेरे तजुर्बे हैं। मैं ने आज़माये हुए हैं। इसलिए मैं बार बार कहता हूं कि जब तक सन्तान अच्छी पैदा करने की रीति नहीं आयेगी, तुम लाख कोशिश करो कि देश में शांति या अमन आ जाये ये नहीं हो सकता। देश को बनाने वाली ये माताएं हैं। अगर लीडर बना सकते होते तो गांधी जी बना जाते। गांधी जी हमें स्वराज्य तो दे गये, मगर ये घिराव, हड़तालें और बसें जलाना आदि, ये हमारे गले में हार डाल गये और हम ऐसे मूर्ख हैं कि जो उसका भाव था, उसको नहीं समझते। जहाँ देखो वहां

हड़तालें हैं। जहाँ देखो वहाँ घेराव हैं। जहाँ देखो वहाँ मुसीबत है।

सरकार की सम्पत्ति की हानी है। ये साठ करोड़ आदमियों का अधिकार है। वे यह नहीं समझते कि उनको साठ करोड़ गुणा पाप लगेगा। जाते कहां हैं ये? प्रकृति का ऐसा नियम है कोई बच नहीं सकता। सरकार के कानून से सम्भव है तुम बच जाओ मगर प्रकृति के कानून से नहीं बच सकते, ये बात सच्ची है। मैंने जैसा आपको ऊपर बताया। जब तक मुझे ये ज्ञान नहीं था मेरा मन अभ्यास करता था मगर छलांगे मारता था। कभी इधर कभी उधर और मैं दाता से शिकायत किया करता था। जब से मुझे ये ज्ञान हुआ कि अशांति का कारण क्या है तो अपनी औरत की पिछली आयु में २६ साल मैं और वह स्त्री पुरुष बन कर नहीं रहे। वह जो पहले १२ साल बसरे बगदाद का मेरा बाप था घर आकर जो मैं गिरा उस ने मुझे अशाँति दी। मगर ज्ञान होने पर फिर मैं बचा, उस से मेरी बुद्धि ठिकाने आ गई। कुछ आप लोगों के अनुभव ने मुझे सिखाया और इस तरह मैं बात के समझने के योग्य

हो गया। मगर आजकल क्या है ? तुम्हारे छः छः बच्चे होते हैं और फिर होता क्या है ? क्या तुम को सन्तोष आता है। तुम बूढ़े हो अपनी जीवनी को सोचो तुम क्या कर रहे हो। तन्द नहीं यहां तो तानी ही बिगड़ी हुई है" अर्थात अपना कर्त्तव्य सभी भूल गये। कहां पिछला ज़माना था मैं आप को एक घटना सुनाता हूं। आप सुनकर हैरान होंगे कि पिछले ज़माने में क्या होता था। मैं बगदाद से घर आया, तो मेरी मां ने कहा अपने बरादरी के फलां ताया को मत्था टेक आ, मैं चला गया। दरवाज़े पर खड़ा हो गया। अन्दर चार बूढ़े बैठे बातें कर रहे थे। पहाड़ों में घरों के अन्दर अंगीठी जलाते हैं। एक बूढ़ा जो अंगीठी के पास बैठा हुआ था उस ने दूसरे से कहा, अरे भाई, तू मुझे तम्बाकू की थैली पकड़ा दे। उस ने मजाक से कहा क्या "तेरइयां रह गईयां" अर्थात शक्ति नहीं रही ? बुढ़े बूढ़े आपस में मज़ाक करते है। एक बूढ़ा उनमें से पूछता है, भाई तू बता, तू अपनी जिन्दगी में स्त्री के पास कितनी बार गया है ? दूसरा बूढ़ा कहता है मैं सारी जिन्दगी में ७ बार स्त्री के पास गया हूं और ७ लड़के पैदा हुए हैं। ये मैंने कानों से सुना बाहर खड़े हुए। फिर तीसरे से

पूछा कि तू बता भाई, उस ने कहा मैं जिन्दगी में चार बार गया और ४ लड़के पैदा हुए, दूसरे ने भी इसी प्रकार गिरावट की कहानियां सुनाई। तुम कहोगे कि मैं लज्जा शरम छोड़ गया। मुझे कोई परवाह नहीं। क्योंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है और मेरी अब पिछली आयु है मैं इस लिए बता देता हूं कि बुद्धि और ज्ञान क्या है जो गुरु देता है। और पिछले समय की शिक्षा क्या थी। जब मुझ को सारा ज्ञान हो गया तो मैं ने काम अंग को छोड़ दिया। मैं समझता हूं मैं ये ज्ञान सुना कर अपनी ड्यूटी पूरी किये जाना चाहता हूं आप सुनो या ना सुनो, अमल करो या न करो आप की मरजी।

और मैंने क्या बुद्धि पाई ? अपने घरों में प्रेम और शाँति रखो, अपने ख्यालात को शुद्ध रखो अपनी नियत को साफ रखो। किसी का हक खाने की कोशिश मत करो। चालाकियां, चार सौ बीस और हेरा फेरी अपने घर वालों के साथ मत करो। अगर करोगे तो तुम बच नहीं सकते। तुम अगर चार सौ बीस करोगे, किसी को धोखा दोगे, किसी से फरेब करोगे, किसी के साथ कुछ करोगे, नतीजा क्या

निकलेगा ? तुम किसी के लिए गढ़ा खोदोगे तुम्हारे लिए कुआ तैयार है। मैं आप को अपने घर की बात बताता हूं। मैं बगदाद से आया, मेरा एक भतीजा था, उसकी ज़मीन में हमारे दो मकान बने हुए थे एक मेरा एक मेरे ताये के लड़के का। मैंने पूछा, ये ज़मीन तो मुन्शी राम की है आप को कैसे मिल गई। मेरा भाई था ताये का लड़का, मुझ से बड़ा था। उस ने बड़े घमण्ड से कहा ये लड़का बदमाश हो गया था। फजूल खर्च था, वो दस रु० उधार मांगता हम उस को बीस रु० दे देते ताकि कर्ज़ उसके सिर ज्यादा हो जाये। जब कर्जा उस पर अधिक हो गया तो हम ने कहा, भई कर्जा ज्यादा हो गया है ज़मीन हम को दे दे। तुम सोचना मेरी बात को, तुम लोग गृहस्थी हो। ज़मीनदारो ! तुम कितनी चालाकियां करते हो, कितनी हेरा फेरी तुम लोग करते हो। तुम को क्या कहूं ! क्या हम नहीं करते ? मैं अपने घर की बात बता रहा हूं। मेरे मुह से निकल गया। मेरा बाप वहां था। मैंने कहा चाचा जी ! हम यहां नहीं बसेंगे। क्योंकि आप ने ये ज़मीन फरेब से ली है। उस आदमी के साथ आप ने चालाकी की। बजाय इस के कि उसका सुधार करते,

उस ने तो दस खर्च करने थे तुम ने उस को २० दे दिये। वो बीस खर्च कर गया। उस के आचार को तुम ने बिगाड़ दिया और फिर इस लालच के पीछे कि तुम को ज़मीन मिल जावे और तुम मकान बना लो। ये मकान हम को नहीं फलेगा। आज दिन तक मेरा वो मकान खाली पड़ा है। मेरा भाई चला गया मैं होशियारपुर चला गया। इसी प्रकार हम लोग अपनी गरज़ के लिए भाईयों के साथ दुशमनी करते हैं। ज़मीन सांझी होती है बांटते समय हम हज़ार चालाकी करते हैं और जब मुसीबत आती है, तब रोते हैं। और जो जो करतूतें आप लोग करते हैं अपने दिलों से पूछो तो सही ? मुझे कहने की क्या जरूरत है। जो कुछ तुम ने अपनी जिन्दगी में किया हुआ है अपने दिलों से पूछो। रिशवतें तुम ने खाई हुई हैं, चार सौ बीस तुम ने की हुई है। तुम राम राम बेशक न जपो, राम राम जपने से, गुरुद्वारों में जा कर मत्था टेकने से, बाबा फकीर का सत्संग करने से, तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। गुरु ने तुम को केवल रास्ता और ठीक तरीका बताना है। कल्याण तुम्हारे अपने अमल से होगा। दुनियां में सुख से जीना हो और अपना भला चाहते हो तो

अपनी नीयत को ठीक रख के, अपने कर्म को ठीक रखो। शुद्ध कमाई खाया करो। जिस से तुम्हारा मन शुद्ध रहे। ये बातें हैं बुद्धि की जो मैं तुम को बता रहा हूं। जिस घर में क्लेश होता है। स्त्री पुरुष की नहीं बनती, सास बहु की नहीं बनती, भाई भाई की नहीं बनती, वहां सुख नहीं है। वहां कोई न कोई मुसीबत आयेगी, हमारी पहाड़ की कहावत है।

जिस घर कलह कलन्तर बसे
उस घर घड़यों पानी नसे

जिस घर कलह कलन्तर होती है उस के घड़े का पानी भी चला जाता है। जिस घर में, जिस देश में बड़ों का अदब नहीं है। वहां कुछ नहीं वो बरबाद हो जाऐंगे, हम आप ही एक पत्थर घड़ कर मूर्ति बना देते हैं। वहां जाकर नमस्कार करते हैं। आजकल क्या हो रहा है? आप ही किसी को प्रधान बनाते हैं, प्रधान मन्त्री बनाते हैं फिर आप ही उनके पुतले जलाते हैं और हड़तालें करते हैं। ये बहुत बुरी बात है। इस समय दुनियां का वातावरण क्या बना हुआ है? घरों के झगड़े मेरे पास रोज चिट्ठियां आती हैं। स्त्रियां पुरुषों से दुखी हैं, पुरुष स्त्रियों से

दुखी हैं। भाई भाई से दुखी है, कोई किसी से दुखी है, कोई किसी से दुखी है। इस का नतीजा क्या निकलेगा। विपत्ति, दुःख, मुसीबत चाहे वो बीमारी की शक्ल में हो या लड़ाई की शक्ल में हो, हानि होगी। किसी को कहो तू औरत की कमाई खाता है। उसे गुस्सा लगेगा। आजकल लड़के जहेज़ मांगते हैं। रेडियो दो, टैलीवीज़न दो, यह चीज़ दो, वो मांगते हैं। क्या वो औरत की कमाई नहीं है? मैं आप को उदाहरण देता हूं। मैं नौकरी में था। क्योंकि मैं सनातनी था, मेरी इच्छा हुई कि मैं यजुर्वेद पढ़ूं, मैंने मां से कहा मां, दस रु० मुझे दे दे मैं ने यजुर्वेद मंगवाना है। माँ ने कहा, बच्चा! मेरे पास इस समय नहीं हैं। अगले महीने वेतन मिलेगा ले लेना। मैंने अपने सुसर को बसोली में पत्र लिखा कि मैं ने वेद मंगवाना है १० रु० भेज दो, मुझे ज़रूरत था। मैंने मां से कहा तू नहीं देती तो मैं अपने सुसर से मँगवा लूंगा। तुम सोचना, मेरी मां अपना सिर मेरे पैरों पर रखकर रो पड़ी। कहती है बच्चा, सुसराल को मत लिखना हमारी बेईज्जती होगी ये ले मेरे सुहाग की नथ, अपने सुहाग की नथ तुम को देती हूं। ये ले सुनार के पास गिरवी रख दे।

दस रु० ले आ, जब तनखाह आवेगी तब पैसे देकर छुड़ा लेंगे। अब तुम सोचो वो समय भी था, और आज का समय है बहुयें दाज या दान नहीं लाती सस्सें उनके साथ लड़ती हैं, कईयों ने उनको तेल डाल कर फूँक दिया। ये मैं तुम को बुद्धि और ज्ञान देना चाहता हूं जो मुझ को मिला। यदि सत्संग के लिए आये हो तो बुद्धि और ज्ञान ले लो और तुम अपने जीवन को सोचो, तुम क्या कर रहे हो। मैं अपनी ड्यूटी पूरी किए जाता हूं। तुम सुनो या न सुनो तुम्हारी इच्छा।

चल सत गुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये।

मैंने ये दुकान खोली है। ताकि सचाई तुम को बता जाऊं। मगर क्षमा करना तुम दुकान पर जाते हो जब तक कीमत नहीं दोगे तुम को कोई सौदा नहीं देगा और तुम को कोई लाभ न होगा। इसी प्रकार सत्गुरु की हाट पर जाकर जो कीमत नहीं देते उनको कुछ नहीं मिलता। तुम पूछोगे सत्गुरु की हाट के सौदे की कीमत क्या है? सत्गुरु की दुकान पर या सत्सँग मे जा कर उसकी कीमत ये है

कि अपने ध्यान से पूरी तरह उस को देखते रहो और उसके बचनों को सुनते रहो। ये है असली कीमत। उस के लिए तुम को कुरबानी देनी पड़ेगी। जो ऐसी कीमत नहीं देता अर्थात ऐसा नहीं करता वो बेशक किसी सत्गुरु के पास चला जावे उसे कुछ नहीं मिलता। मान लो तुम ने बड़े ध्यान से बात सुन भी ली, खोपड़ी में बैठ भी गई, जिस प्रकार तुम बाज़ार में जाते हो, सब्जी और सौदा ले आते हो। मगर अगर उस सौदे को लेकर घर में पकाओगे नहीं, सब्जी बना के या रोटियां पका के खोओगे नहीं। बल्कि उसे रख छोडो। प्रयोग न करो तो तुम को उस सौदे के लाने का कोई लाभ नहीं होगा। ऐसे ही सत्सँग में जाते हो, बात को समझते हो, जो कुछ गुरु कामिल कहता है उसको ध्यान से सुनते और गुनते हो मगर तुम अमल नहीं करोगे तो कोई लाभ नहीं, मेरे पास कई आदमी आते हैं, मेरी बातें सुन कर चक्कर खाते हैं जानते भी हैं, मगर जो कुछ समझते हैं उस पर ठहरते नहीं। कई बार मैं सोचता हूं क्या उन का कसूर है। नहीं।

जिस पर दया आद कर्ता की, वो ये नयामत पाये

मगर हमारा फरज़ है कोशिश करना, हिम्मत करना

और अमल करना अब रह गया प्रभु से हेत।

चल सत् गुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये

अभी तक तो था प्रवृत्ति मार्ग, यानी दुनियां की बुद्धि और ज्ञान आप को बताया है। अब निवृत्ति मार्ग की तरफ आता हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं लोगों को उपदेश करता है तुम को परम पद मिल गया ? अगर मिल गया तो वो क्या है ? मुझे नहीं पता कबीर या राधास्वामी दयाल का परम पद क्या था। वो शायद कोई और हो। जो परम पद मैंने समझा वो मैं आप को बताये देता हूं। जब से मुझे मन और माया के रूप का पता लगा, और मुझे यकीन हो गया कि मेरे अन्दर जो कुछ विचार, भाव और शक्लें पैदा होती हैं ये मेरे अपने मन का चक्कर है। वो सब काल्पत हैं माया हैं। हैं नहीं। संस्कार हैं। तो मैं स्वभाविक ही मन को छोड़ गया, मन को छोड़ना क्या है ? जो बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे।

दस दुवारे लन्घो, सूरज चांद सितारे लन्घो
ते आगे सतगुरु खलोता ए।

दुनियां ने ये समझा कि आगे बाबा सावन सिंह जी खड़े हैं। यही एक भ्रम है। जब मैं मन को छोड़ जाता हूं तो आगे है प्रकाश और शब्द। जो चीज़ प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वो और है और प्रकाश और शब्द और है। इस को कहते हैं आद अवस्था या सुरत। हम ने वहां जाना है और हम वहां से आये हैं।

कबीर साहब का दूसरा शब्द

दूर गवन तेरो हँसा हो, घर अगम अपार ॥ टेक

नहीं वहाँ काया नहिं वहं माया, नहिं वहं त्रिगुन पसार।
चार बरन उहवां हैं नाहीं, ना है कुल व्यवहार॥
नौ छः चौदह विदया नाहीं, नहिं वहां वेद विचार।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार॥
पांच तत्त नहिं उत्पति भइलैं, सो परलय के पार।
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसों औतार॥
सोरह सँख के आगे होइ, समरथ कर दरवार।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहां शब्द झँकार॥
पुरुष रुप कहा वरना महिमा, तिन गति अपरमपार।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार॥

इस का तजुर्बा मुझे सारी जिन्दगी में केवल एक बार हुआ। एक रौशनी के ऐसे समुद्र में अभ्यास में चला

गया जिस का मुझे अन्त न मिला। इस वास्ते मैं कहता हूं कि जो कुछ उन्होंने लिखा है वो ठीक लिखा है। क्योंकि मेरे साथ बीती हुई है। बारह बारह घण्टे मैंने अभ्यास किया। तो एक दिन जो मैं ने अभ्यास किया तो मैं ऊपर चला गया। इतनी रौशनी थी कि जिसका कोई हिसाब नहीं। रौशनी में ही तैरता रहा। उसका अन्त नहीं मिला वहां रोशनी थी और एक विशेष प्रकार का शब्द था। मैं ने जीवन में केवल एक बार देखा। अब कई बार कोशिश करता हूं मगर अब उस तरफ ख्याल ही नहीं जाता। क्योंकि मैं अब सत लोक का रहने वाला नहीं रहा। मैं चला गया अनामी धाम की तरफ। अनामी धाम में न सूर्य है, न चाँद है, न कुछ और यही आखरी मंजिल है। वहां सत नाम न नाम और न वहां अनामी। कबीर साहब भी एक शब्द कहते हैं।

जहां पुरुष तहां कछु नाहीं, कहे कबीर हम जाना
हमरी सेना जो कोई समझे, पावे पद निर्वाना

तो इन सारी बातों से मुझे क्या साबित हुआ? मैं कहां पहुंचा? कि मैं कौन हूं? एक चेतन का

बुलबुला हूं । इस चेतन के बुलबले में एक 'मैं' आ गई है । इस 'मैं' ने इन सन्तों को नचाया । इस 'मैं' ने इन साधुओं को और गृहस्थियों को नचाया । इस 'मैं' ने सारी दुनियां को नचाया । गुरु की दया हो गई, आप लोगों की दया हो गई । उस 'मैं' का रूप समझ में आ गया । तीन 'मैं' तो मेरी मर गई । चौथी सुरत की 'मैं' अभी समाप्त नहीं हुई । बहुत कोशिश करता हूं फेल हो जाता हूं । अपने आप को भूल नहीं सकता । मालिक कौन है ? जो हमारे अन्तर रह कर हर चीज़ का साक्षी है । हर वस्तु को देखता है । महसूस करता है । अन्तर में भी बाहर भी । वो हमारी ज़ात है । मगर हम जो वस्तु देखते हैं उस में फंस जाते हैं । मालिक है तो साक्षी मगर हम उसको साक्षी नहीं समझते हम उसको अपना मैंपना समझते हैं

छर अछर दोनों से न्यारा सोई नाम हमार
सार शब्द को ले के आया मृत्यू लोक मँझार

सार शब्द के दो अर्थ हैं । एक सार शब्द अन्तर का एक बाहर की बिल्कुल सचाई जो मैंने समझी और जो मैं आप लोगों के सामने कहता हूं । जिस प्रकार एक औरत हर प्रकार से अपने आप को पती के सुपुर्द

कर देती है। ऐसे ही जो कुछ मैंने जीवन में सीखा, अमल किया, बिल्कुल छुपाया नहीं, आपके सामने जिस तरह औरत ने अपने पती के हवाले कर दिया इसी प्रकार जो कुछ मैंने सीखा सत् संगियों के हवाले कर दिया। आप मानें या ना मानें मैं इस का ठेकेदार नहीं हूं। मेरे सिर पर तो गुरु का कर्ज़ा है। जिस को मैं कहने के लिए मजबूर हूं।

चार गुरु मिल थापल हो, जग के हैं कढ़ीहार

चार गुरु तुम को जगत से इस दुनियां से पार करेंगे। कबीर साहब कहते हैं और सनातन धर्म में चार गुरु ये हैं।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णू, गुरु देव महेशवरा
गुरु शाक्षात पार ब्रह्म तसमै श्री गुरवे नमः

ये चार हो गये, सिखों में आद गुरुवे नमः, जुगाद गुरुवे नमः, सत गुरुवे नमः, श्री गुरुवे नमः। सिख जो मरज़ी इस का अर्थ निकालें, मैं अपने तजुर्बे के अनुसार इस का अर्थ करता हूं। वो गुरु क्या है? देह के हालात की पूरी जानकारी, मन के हालात की पूरी जानकारी, आत्मा के हालात की पूरी जानकारी और सुरत के रूप का यानी अपने रूप का ज्ञान ये चार गुरु हैं। गुरु नाम ज्ञान का है। यह समझना कि

शरीर क्या है, मन क्या है, आत्मा क्या है और हम क्या हैं ? तो मुझे आप लोगों से पता लग गया कि मैं कौन हूं । मैं एक चेतन का बुलबुला हूं । क्यों कहता हूं ? अगर मैं कह दूँ कि मैं अनामी हूं, अकाल हूं, राधास्वामी हूं या परम तत्व हूं तो क्या मैं कुछ कर सकता हूं ? ये बड़े बड़े कहलाने वाले जो हैं, अपनी बिमारी दूर न कर सके, तुम्हारी कहां से दूर करेंगे । कितने ही सन्तों की सन्तान नालायक निकली । इन की अपनी औरतों के साथ नहीं बनी इस वास्ते मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान, तू इस भरोसे मत रह कि तू ने फकीर चन्द से या किसी बड़े गुरु से नाम लिया हुआ है बल्कि अपने अमल को ठीक करो । अपनी करनी ठीक करो । घरों में शांति रखो । और सच्चे बनो, दुनियां को हमेशा समझो कि यहां तुम ने सदा नहीं रहना । कोई दस साल जिया कोई बीस साल जिया, कोई पचास साल । एक दिन चले जाना है । मगर हमने तो समझा हुआ है कि यहां हम ने हमेशा ही रहना है ।

ऊन की वइयाँ पकड़ रहो हो, हँसा उतरो पार

दुनियां में चार गुरुओं का मैंने अलग ब्यान कर

दिया । ज्ञान क्या है बुद्धि क्या है ? तुम कैसे पार उतरोगे या पार हो सकते हो ? जब तक किसी को ये पूरा यकीन नहीं है कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है ये माया है, उस ने लाख शब्द अभ्यास किया हो उसका आवागवन नहीं जायेगा । शास्त्र भी यही कहते हैं जब तक किसी का किसी से मोह है उसका आवागवन नहीं जायेगा । इस वास्ते जो किसी गुरु का ध्यान करता मरेगा, वह दूसरे जन्म में आयेगा । उसका जन्म अच्छा होगा ये ठीक है मगर उसको आना जरुर पड़ेगा । क्योंकि वह मन के चक्कर से नहीं निकलेगा । दुनियां में कोई सच्चाई ब्यान नहीं करता । सब मज़हब वाले गद्धियों वाले अपनी तरफ लोगों को खींचते हैं । मैं नहीं खींचता । मैं आप को आप की तरफ धक्का देता हूं । अपने आप को संभालो । गुरु ने तुम को ज्ञान देना है, समझ देनी है, विवेक देना है और अगर तुम ये चाहो कि किसी गुरु ने तुम को फूँक मारनी है ये झूठी बात है ।

जम्बूदीप के तुम सब हंसा. गह यो शब्द हमार
दास कबीरा अब के देहन, निरगुन के टकसार

ये एशया हमारा सारा जम्बूदीप कहलाता है । कबीर

साहब जज्बे में आकर कहते हैं कि ऐ जम्बूदीप के आदमियो, मेरी बात को समझो और मैं कहता हूं ऐ हकूमत वालो ! ए दुनियां वालो तुम जो चुनावों के कारण लड़ लड़ कर मर रहे हो क्योंकि प्रत्येक आदमी अपनी कुर्सी के लिए झगड़ा करता है और एक दूसरे से नफरत, बुगज़, हसद और कीना बढ़ रहा है, ये तुम्हारे और देश के लिए मुसीबत और तकलीफ लायेगा। इस लिए आप लोग जो सत्संग में आये हैं। आप को मैं भाई के रूप में कह देता हूं। मैं गुरु कोई नहीं हूं। मेरे जिम्मे एक ड्यूटी थी, मैंने पूरी करदी पता नहीं मैंने ठीक किया या ग़लत किया है। अपनी आत्मा को सच्ची रखो। अपनी जाती गरज़ के लिए किसी के साथ हेरा फेरी धोखा फरेब मत करो। भाईयों के साथ, मां बाप के साथ गुरु के साथ, सम्बन्धियों के साथ धोखा मत करो मैंने एक ही बात समझी है। बस और कोई पाप नहीं, कोई पुण्य नहीं।

हम को इन मज़हब वालों ने, इन पंथ वालों ने, बेवकूफ बना कर लूटा है। मैं सच्ची बात बताता हूं। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता। न कोई मरते समय लेने जाता है। प्रकृति ने मेरे दिमाग को

हिलाया है कि मैं सच्चाई ब्यान करुं दुनियां में कि सचाई क्या है। दीवानो ! कोई किसी को कुछ नहीं देता। तुम्हारा अपना विश्वास, तुम्हारा अपना प्रेम तुम्हारी श्रद्धा तुम को लाभ पहुंचाती है। जो कुछ जिस को मिलता है। उसके अपने विश्बास और अपने ही प्रेम का फल मिलता है। इन्सान के विचार में बड़ी ताकत है। इन्सान के मन के अन्दर बड़ी भारी शक्ति है अगर इस को साफ किया जाये। तो ध्यान किया करो, जो भी तुम्हारा इष्ट है, जिस मज़हब के हो उस का किया करो और जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है उसे ये मत समझो वो इन्सान है उसे पूर्ण मानो। यही एक सफलता की कुँजी है। अपने आप को उसके सुपुर्द कर दो। ध्यान करो। सच्चे मन से पुकार करो वो सब की सुनता है। शुद्ध कमाई खाओ। विषय विकार मत कमाओ। एक मालिक है, उसका किसी एक रूप में विश्वाश करो और ध्यान करो, सब कुछ मिल जायेगा। मैं तो एक ये जानता हूं। आम दुनियां के लिए भक्ति मार्ग है। एक जगह श्रद्धा और विश्वास रखो उसका सहारा लो।

सब को राधास्वामी

शब्द

सन्तो महन्तो सुमिरहू सोई, काल फांस से वांचा होई ।।
दत्तात्रेय मरम नहीं जाना विध्या साधि भुलाना
सलिला मथि कै वृत को काठन, ताहि समाधि समाना
गोरख पवन राखि नहीं जाना, योग युक्त अनुमाना
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरी, पार ब्रह्म नहीं जाना
वशिष्ठ श्रेष्ठ विध्या अधिकारी, रोमेसो शिष शाखा
जाहि राम को करता कहिये, तिनहुक काल न राखा
हिन्दू कहे हमें ले जा रब, तुरुक कहे मोर पीर
दोनों आय दीन मेह झगरहिं, देखहीं हंस कबीर

इस से आगे सत्संग पेज २ से शुरू है ।

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 4-11-79

आज एक सरदार साहब आये हुए हैं । जिन्हों ने बाबा सावन सिंह से नाम लिया हुआ है। एक सज्जन गवालयार से आये हुए हैं जो नाम देते हैं। और दुर्गा दास चमन भी आया हुआ है। ये भी नाम देता है। मैं अपनी आत्मा से पुछता हूं। फकीर चन्द, कुष्टी हो कर मरेगा अगर तू कोई बात ऐसी कहेगा, जिस को तुम ने आप आज़माया न हो। मैं ब्राह्मण के घर पैदा हुआ, राम कृष्ण देवी देवता के मानने वाला था, राम और कृष्ण का ध्यान किया करता था, जब इस सँतमत में आया और इन की बानियां पढ़ीं तो दिल घबराया, इन में सब का खण्डन था। बानियां भेद नहीं देती थीं और मुझे समझ नहीं

आती थी। अगर मैंने विवश हो कर खोज की तो इन बानियों ने ही मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया, आज का आप को कबीर साहब की बानी सुनाता हूं। वो कहते हैं।

सन्तो, महन्तो, सुमरो सोई काल फांसी से बाँचा होई

कबीर साहब किन को कहते हैं, सन्तों को और जो महन्त हैं उन को कहते हैं। कि उस को सुमरो जिस को काल और माया न व्यापती हो। आज कल लोग कोई कबीर साहब को पूजता है, कोई किसी गुरु को पूजता है। मैं पूछता हूं कबीर साहब के कहने के अनुसार क्या ये सारे गलत हैं, मैं कहता हूँ हां, ये सारे गलत हैं। राजनीति वालों में यूँ सचाई नहीं व्यौपारियों में यूँ सचाई नहीं, घरों में यूँ प्रेम नहीं, मुहब्बत नहीं सचाई नहीं। एक सन्तों और महात्माओं के फिरके को हम समझते थे ये सच्चे होंगे, इन में भी मेरी समझ में बहुत कम सच्चाई नज़र आई। जितना झूठ और धोखा आम तौर पर इन गुरुओं ने दिया शायद किसी ने भी नहीं दिया। आम तौर पर जितने ये गुरु बने हुए हैं और आजकल के लोगों को जितने ये नाम देते हैं

यह सब एक दुकानदारी है, पाखन्ड का जाल है। कोई सचाई नहीं बताता। चेले बनाये जाते हैं। सच्ची बात तो ये है। आजकल का गुरु मत ठग बाज़ी है। ये गुरू अपने मतलब के लिये नाम देते हैं। जो नाम है असली वो और चीज़ है। लोग बाहर के गुरू को पूजते हैं। ये जितने पूजने वाले हैं ये उस चीज़ को पूजते हैं जिस में काल और माया है और कबीर साहब के कहने अनुसार ये गलत हैं। मुझ को इसकी समझ नहीं आती थी, हुकम था गुरु की सेवा करो। मैंने सच्चे दिल से गुरु की सेवा की, सोने के ताज बनवाए, चांदी के हुक्के बनाये, ज़रींदार कपड़े पहनाये, बड़े बड़े सिहांसन बनाये और उन को मालिक का रूप मान कर और मालिक का औतार समझ कर पूजा, मगर वो भेद नहीं मिलता था। उस भेद को मालूम करने के लिये एक दिन १९९८ में लाहौर में प्रातः नौ बजे से लेकर शाम के पांच बजे तक प्रेम से उनको तंग किया जिसका आज मैं अफसोस भी करता हूँ। जहां वो बैठते मैं रोता और कहता महाराज! मुझे वो घर दिखा दो जहां सन्तों का मालिक रहता है। वो भेद मुझे बता दो। कहने लगे मेरा आदेश मानो। तुम को इस भेद का पता

लग जायेगा। क्या हुकम है ? नाम दिया करो और सत्संग कराया करो। मुझे इस भेद को समझाने के लिये ही उन्होंने मुझे ये काम दिया था। इस काम के करने से मुझे क्या मिला, वो भेद क्या है ? इस को बताने के सिलसिले में आज मैं आप को अपनी जिन्दगी के अनुभव का निचोड़ बता रहा हूँ :—

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।,

जो कुछ है ऐ इन्सान ! तेरे अपने अन्तर है। यही वेद कहते हैं। और ऐसा एक मन्त्र है कि ऐ इन्सान तू आप पूर्ण है। वो कौन सी चीज़ है जो हमें अपूर्ण बनाती है ? अज्ञान और भ्रम, दुनिया की इच्छायें, दुनिया की चाह और हमारे काम का अंग, विषय विकार का जीवन। केवल भ्रम में आकर इन्सान अपने आप को पापी, पुन्नी या दानी या कमज़ोर मानते हैं। इन्सान की अपनी सुरत उस ज़ात या मालिक की अंश है। जिस तरह सूर्य की किरण सूर्य का अंश है, सूरज से अलग नहीं। इसी प्रकार हम भी उस परमतत्व आधार से अलग नहीं। इस भ्रम का क्या अर्थ है ? कबीर साहब के कहने के

अनुसार नाम की प्राप्ती उस को हो सकती है जिस में काम न हो ।

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं जहाँ नाम नहीं काम
रवी रजनी दोनों नां मिलें एक ठौर एक याम

काम के अर्थ केवल औरत से भोग करना ही नहीं है । ये तो काम का केवल स्थूल रूप है । काम का अर्थ है :—

काम काम सब कोई कहे काम न चीन्हे कोय ।
जेती मन की कल्पना काम कहावे सोय ॥

जितनी मन के इच्छायें और आशाएं हैं ये सभी काम हैं । अब जितने नामधारी हैं क्या ये काम से बरी हैं ? क्या इच्छाओं से बरी हैं ? तो फिर लाख किसी को गुरु धारण कर लो । इन का कल्याण कैसे होगा ? हो ही नहीं सकता, बस यह है भेद ।

सब से पहली बात जो मैं बताना चाहता हूँ, वो है, शिव संकल्पम् अस्तु । पहले अपने मन के ख्यालात को शुद्ध रखने की कोशिश करो । अच्छे विचार रखो जिस से किसी आदमी का दिल न दूखे । सब से पहली अहिंसा यह है कि तुम किसी आदमी का दिल

न दुखाओ। यर्थाथ अहिंसा मैं जो समझता हूँ अपने मन को दुखी मत करो। जो अपने मन को दुखी नहीं करता वो ही अहिंसा का सच्चा पुजारी व सच्चा अनुयायी है जिस का अपना दिल नहीं दुखता वो औरों का दिल कैसे दुखावेगा। अपने मन को शांत और खुश रखना ही अहिंसा है। ये मेरे जीवन का अनुभव है। मैं ऐसा करता हूँ जहां तक हो सकता है। फिर कि ी पूर्ण पुरुष के सतसंग से सच्ची समझ लो, सच्चा विवेक लो। फिर अपने मन के चक्कर में आकर दुखी और सुखी न होंगे। बाहर के गुरू की केवल इतनी ही ड्यूटी है कि वह सत्संग करा कर भेद दे, सच्ची समझ दे। मेरे अनुभव में एक बात आई है कि जो कुछ किसी को मिलता है ये उसके पिछले कर्मों का फल है या इस जन्म के कर्मों का फल है। जो कुछ है उसके मन का विश्वास है। कोई गुरु किसी को कुछ नहीं दे सकता। ये सन्त अपनी बीमारी दूर न कर सके तो तुम्हारा क्या करेंगे। इस लिए सिद्ध हुआ कि कर्म प्रधान है। जो कर्म तुमने किये हैं बच नहीं सकते। इस लिये अपने ख्याल और कर्म को ठीक रखो। किसी के साथ धोखा, फरेब, हेरा फेरी, चार सौ बीस, खुदगरज़ी

की बात मत करो। ख्याल को ठीक रखना अर्थात शिव संकल्पम् "अस्तु", वेद मार्ग को पालना ये हमारा परम धर्म है। इस लिये शांति के लिये अभ्यास और सत्संग दोनों चीज़ साथ हैं तब काम चलता है।

दत्ता त्रेय मरम नहीं जाना, मिथ्या साध भुलाना
सलिला मथ के घृत को काढ़न, ताते समाधि समाना
गोरख पवन राख नहीं जाना, योग युक्ति अनूमाना
रिद्धी सिद्धी सँजम बहुतेरे, पार ब्रह्म नहीं जाना

कबीर साहब कहते हैं। दत्ता त्रेय और गोरख नाथ दोनों ही गुरु ज्ञान के बिना, सचाई के बिना, मरम और भेद के जाने बिना, मानसिक भक्ति, मानसिक योग और मानसिक समाधि में ही भूल गये। जो असलीयत और सचाई या सार ज्ञान के पाने की नज़र से ऐसे ही है जैसे कोई पानी को मथ के घी निकालना चाहे। इन्होंने नियम किये, संजम किये, रिद्धी सिद्धी तो उन में बहुत आ गई मगर सुरत की भक्ति के बिना वो प्रकाश में न ठहर सके और प्रकाशमय न हो सके। इस के बिना किसी का कल्याण नहीं हो सकता। जो कुछ तुम्हारे अन्दर प्रगट होता है वो जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुए हैं वो ही शकलें बनती हैं और

वो तुम्हारा अपना मन है, तुम्हारा अपना आत्मा है। तुम्हारा अपना ही ख्याल और अपना ही विश्वास होता है। दूसरे गुरु इन बातों का अनुचित लाभ उठा कर लोगों को फँसाते हैं। मैं अधिकारियों को आज़ाद करने के लिये आया हूं फँसाने के लिये नहीं आया। मेरा फँसाना इतना ही है, बस! जब तक तुम यहां बैठ हुए हो और मेरी बातों को सुन रहे हो गुरु की भक्ति ज़रूरी है। मगर ये नहीं जो तुम समझ रहे हो। गुरु की भक्ति ये है जो तुम इस समय सत्संग सुन रहे हो।

सत्संग करे बचन पुन सुनो, सुन सुन लिल मन में गुने
गुण गुण काढ़ लिये तिस सारा, काढ़ सार तिस करे अहारा
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गँवाई

गुरु की भक्ति गुरु से केवल भेद को समझ लेना है।

विशिष्ट श्रेष्ठ विद्या अधिकारी, राम सो शिष्य साखा
जाहि राम को करता कहिये, तिनहूँ काल न राखा

इस राम का अर्थ दशरथ के बेटे से है। कबीर साहब ने चार राम कहे हैं।

एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट घट में बोले
एक राम का सकल पसारा, एक राम सब से न्यारा

कबीर साहब कहते हैं। राम जो श्रेष्ठ विद्या के जानने वाले और वशिष्ट जो के चेले थे उस राम को कर्ता कैसे कहें। वो तो खुद काल के चक्कर से न बच सके। तुम्हारी दया से मैं उस राम को पूजता हूँ जो सब से न्यारा है। जो परम तत्व आधार है। अकाल है। तुम उसका विश्वास रखो। वो ही सच्चा गुरु है। जहां भी तुम विश्वास रखते हो उसको पूर्ण मान लो। सब कुछ तुम्हारे विश्वास में है। तुम्हारे विश्वास से तुन्हारे दुनियां के भी सभी काम होते रहेंगे। और अगर सच्ची चाह है, दिल की सचाई है और सच्ची नियत से निविण की इच्छा है तो भी पूरी हो जायेगी। अपनी नियत को साफ रखो। कुदरत प्रकृति कोई न कोई ऐसा मेल मिला देगी कि तुम्हारा काम बन जायेगा।

हिन्दू कहें हम ले जावें, तुरक कहें मोरे पीर
दोनों आये दीन में झगड़े, दखें हन्स कबीर

कबीर साहब ने मुसलमानों और हिन्दुओं का दोनों का खण्डन किया है। मेरे विचार में तो ये है कि कुदरत जो कुछ कराना चाहती है वो वैसे ही

जीव पैदा कर देती है। यह मेरे जीवन का निचोड़ है, किसी के कुछ बस में नहीं है।

जैसे जैसे गृह पड़े हुए होते हैं वैसे ही वो काम करता है। अगर दुनियां से पार जाना चाहते हो तो मरने से पहले प्रकाश और शब्द को पकड़ो। पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म को पकड़ो। हिन्दुओं ने चार ब्रह्म कहे हैं। सबल ब्रह्म जो शरीर की ताकत है शुद्ध ब्रह्म मन की ताकत है। पार ब्रह्म आत्मा की ताकत है और शब्द ब्रह्म सुरत की ताकत है। बाकी रह गया हम रोते हैं दुनियां की बासनाओं के लिये। अरे बाबा! ये जो कुछ मिल रहा है हमको हमारे कर्म हैं जो हम ने किये हैं, सभी वो भुगतने पड़ते हैं। अगर गुरु का ज्ञान मिला हुआ है तो उन कर्मों को भोगते हुए भी हम सुखी रह सकते हैं। अगर ज्ञान नहीं है तो हाय हाय करते रहेंगे, रोते रहेंगे, पीटते रहेंगे, ये है सारा खेल।

जहां तक हो सके घरों में शांति रखो। ईमानदारी और सच्चाई से काम लो मगर ऐसी सच्चाई न हो कि किसी को अनुचित हानि न हो। सब से बड़ा बैरी हमारा काम है, ये बताये देता हूँ। मैंने

ज्यादा समय लिया बात को समझने में, क्यों ? क्योंकि मेरी छोटी उमर की शादी थी। और मैं कामी था, प्रकृति ने मेरी सहायता की, पहली औरत सात साल बीमार रही हस्पताल में। फिर दूसरी शादी कराई। मगर मैं बसरे बगदाद चला गया। फिर आया तो फिर फँसा मगर फिर समझ आई। अपना दोष समझ में आया तो संभला मगर पांच साल फिर भी गिरा, उस में भी दो बच्चे पैदा किये। परन्तु मालिक ने मुझ पर बड़ी दया की, कि जो खुदरौ औलाद थी मेरी वो मर गई। एक लड़का मर गया, एक विवाहित लड़की मर गई, दो और बच्चे मर गये। और मैं बहुत खुश हूँ। लोगों की औलाद मरती है वो रोते हैं। और मेरा एक एक पौंड खून बढ़ गया। मेरी औरत सत्संगियों को कहा करती थी तुम्हारा गुरु तो ऐसा है। मेरा बच्चा मर गया तो तुम्हारे गुरु को तो जोबन चढ़ गया। इस लिये मैंने तालीम को बदला है। औलाद को औलाद के ख्याल से पैदा करो। फिर समझ व होश आने के बाद औरत की जिन्दगी में पिछले २६ साल हम, औरत और मरद बन कर नहीं रहे। वो जो मेरा ब्रह्मचर्य बना रहा पिछली उमर का उसने मेरे दिमाग के किवाड़ खोल

दिये । तो जो आदमी कामी है । वो अगर ये चाहे कि मुझ को शांति मिल जाये, या मुझे ज्ञान मिल जावे, ये नहीं हो सकता, मेरी समझ में जो आया वो मैंने बता दिया ; और वो समझ कैसे आई ? उसका कारण बताता हूं । लाहौर से २ आदमियों ने चिट्ठी लिखी दाता को, कोई सवाल था, उन्हों ने उन को जवाब दिया कि इस सवाल का जवाब फकीर चन्द देगा, सुनाम में स्टेशन मास्टर है । तुम वहां जाओ, वो मेरे पास आये,तो मैं आप काम में फँसा हुआ था, अशांत था, खुद मैंने कहा भाई मुझे तो कुछ आता नही मैं तो आप अशाँत हूं । कृपा करके आप उन ही से पूछो , उन्हो ने दाता दयाल को लिखा, फकीर चन्द जवाब देता है तो दाता ने उनको लिखा , जिस को फकीर चन्द से कुछ नही मिला , उस को मेरे पास से भी कुछ नही मिलता अब वह खत ले कर मेरे पास आये । जब मैंने चिटठी पढी, आप को झुट नही बोलता मेरे दिल के अन्दर से गुरुमत के खिलाफत में बहुत बुरे ख्यालात निकले, मैं ने कहा काहे का गुरुमत है । ये, मैं तो आप अशांत हूँ मैं चूंकि मालिक को मानने वाला था, तो मैंने तंबूरा पकड़ा हाथ में और मालिक को प्रार्थना करने लगा, करता करता बेहोश हो गया; बेहोशी की हालत में मेरे अन्तर से आवाज आई कि तुम में काम का नुक्स है ।

राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक ७ नबम्बर १९७६

राधास्वामी । मैं जो यह काम करता हूँ इससे मैं सुखी नहीं हूँ । मेरा कर्म मुझे घसीटकर इस ओर ले जाता है । मुझे बचपन में राम, भगवान या परमात्मा को मिलने का विचार पैदा हुआ था । मेरा भाग्य या मौज मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में ले आई । सन्तों ने नाम की महिमा बताई । कल गुरु नानक साहिब का जन्म दिन था । रात को रेडियो पर उनकी प्रसंशा में किसी ने कुछ कहा और किसी ने कुछ कहा । मैंने सन्तों की शिक्षा के बारे जो समझा है मैं वह कहता हूँ । गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी में लिखा है :—

१. सरब रोग का दारू नाम

२. नानक नाम मिले तां जीवां मेरा तन मन थीवे हरया

राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी में लिखा है :—

राधास्वामी नाम जो गावे सोई तरे
कल कलेश सब नाश सुख पावे सब दुख हरे
ऐसा नाम अपार कोई भेद न जानई
जो जाने सो पार बहुर न जग में जनमई

कबीर साहिब ने एक शब्द में लिखा है :—

अजर अमर इक नाम है जहां कोई कोई जावे

मुझे जब नाम मिला था तो मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। यह मेरा कर्म है। अब इस कर्म से मैं सुखी नहीं। संसार को नाम की आवश्यकता नहीं। नाम को जो कुछ मैंने समझा है वह बहुत कठिन वस्तु है। मैंने बहुत राम राम जपा, माला फेरी, गायत्री का जाप किया और पांच नाम का सुमिरन किया। क्या ऐसा करने से दुख चले जाते हैं? मेरे तो गये नहीं। और लोग भी कोई राम राम जपता है, कोई

अल्ला अल्ला जपता है, कोई सुमिरता ध्यान करता है। सब लोग अपने अपने विश्वास और तरीके से जपते हैं। क्या इनके सब रोग चले गए ? नहीं। साधारण लोगों की बात को तो छोड़ो सन्तों ने, गुरुओं ने और महात्माओं ने अन्तिम आयु में और अन्त समय पर कितने कष्ट उठाए। मैं हूँ सत्यप्रिय व्यक्ति। मैं सच्ची बात कहता हूँ लेकिन दुनियां सच्चाई सुनने के लिए तैयार नहीं। मैं इन वर्तमान महात्माओं से पूछता हूँ कि आप बताएं कि असली नाम क्या है जिससे सब रोग दूर हो जाएं। क्योंकि मैं सत्यप्रिय हूँ और संसार सच्चाई को पसन्द नहीं करता इस लिए मैं इस काम से सुखी नहीं हूँ क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इस लिए कहता हूँ कि वह नाम क्या है जिससे सब रोग दूर हो जाते हैं ? सुनो। जब तक हम जीवन से हस्ती में नहीं जाएंगे हम दुःख सुख से बच नहीं सकते। यही बात सन्त कहते हैं कि असलियत सत्लोक में है। ये जितने निचले दर्जे सहस दल कंवल, त्रिकुटि, सुन्न महा सुन्न और भंवर गुफा जो है ये सब जीवन के दर्जे हैं। यही सनातन धर्म

कहता है कि असली चीज़ भू भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, से आगे सत्य में है याअन्नमय कोश, मनोमय कोश, प्राणमय कोश, विरानमय कोश और आनन्द-मय कोश से परे है। हस्ती में जाने से सब रोग दूर होते हैं। जब कलोरोफार्म सुंघाकर डाक्टर लोग रोगी का ओपरेशन करते हैं लेकिन उस समय रोगी को कोई कष्ट नहीं होता ऐसे ही जब हम शरीर, मन और प्रकाश अर्थात आत्मा स्वरुप से परे चले जाते हैं तो हमको वहाँ कोई कष्ट नहीं होता। वह है सर्वरोग का दारू नाम।" राधास्वामीमत कहता है :—

नाम रहे चौथे पद माहीं, ये ढूढे तरलोकी माहीं

अब कोई "राम राम नाम ले लेता है" कोई "ओं नमो शिवाये" नाम ले लेता है कोई पाँच नाम लेता है और समझता है कि उसने नाम ले लिया। लेकिन जिस नाम से सर्वरोग जाते हैं वह तो त्रिरलोकी से परे है :—

नाम की औषध मिली संसार का क्यों रोग हो

वह नाम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोधभानो। से परे जाने के बाद मिलता है और उससे सर्वरोग दूर होते हैं। मुझ पर तो आप लोगों

दया कर दी। जब से मुझे आप लोगों ने बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होकर आपके कई प्रकार के काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो भाव विचार और संकल्प आते हैं वे हैं नहीं केवल संस्कार हैं और वही फुरते हैं असल में ये हैं नहीं। मैं सोचता हूँ कि गुरु नानक साहिब क्या कह गये और इन लोगों ने उनकी शिक्षा को क्या समझा। वह तो नाम की महिमा गा गये और उन्होंने अपने विचार अनुसार उनकी शिक्षा को समझा। सब पंथ धर्म और समप्रदाय नाम की महिमा गाते हैं। गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी नाम की महिमा इस प्रकार गाई है :—

कली केवल इक नाम आधारा, वेद शास्त्र श्रुतिमत सारा

मगर इस नाम को प्राप्त कौन कर सकता है ? साधारण संसार उस नाम का अधिकारी नहीं है। जिसको यह अनुभव हो जाता है कि इस संसार में सुख नहीं है और जिसको दुनियाँ से उपराम हो जाता है वह इस नाम को प्राप्त कर सकता है। स्वामी जी महाराज ने लिखा है :—

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की या मन आसा।
धन संतान प्रीत नहि जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके।
तन इन्द्री असक्त न होई, नींद भूक आलस जिन खोई।
विरह बाण जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुर जागा।

ऐसे आदमियों के लिए नाम है आम दुनियां के लिए नहीं। तो नाम क्या है ?

नाम लेने वालों को क्यों इस जगत में सोग हो

मैं जब हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास गया था तो जो कुछ उन्होंने मुझे फरमाया उस समय मेरा हृदय उस को मानता नहीं था तो उन्होने मुझे कहा :—

जब लग देखो न अपने नैना, तब लग मानो न गुर के बैना।

अब हजूर दाता दयाल जी महाराज ने तो यह कह दिया कि जो आदमी नाम जपता है उसको इस संसार में सोग नहीं होता लेकिन मैं अपने आप से पूछता हूं कि यह ठीक है ? हां ठीक है। कैसे ? मैं त्रिलोकी से परे का साधन करता हूं लेकिन वहां साधन करने का अवसर मुझे तब मिला जब मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर में जो कुछ प्रकट

होता है यह केवल संस्कार हैं और इनको असलियत कुछ नहीं है तो फिर जब उस साधन से नीचे आता हूँ तो संसार में जो कुछ भी होता है मैं उसको माया समझता हूं। इस ज्ञान से मुझे संसार में कोई सोग नहीं होता। तुम लोग बेशक नाम जपते रहो मगर जब तक तुमको यह विश्वास नहीं और यह ज्ञान नहीं कि यह जो कुछ हो रहा है यह सब माया है तुम सोग से बच नहीं सकते।

नाम रहे सतगुर, आधीना

सत्गुर नाम है सच्चे ज्ञान, सच्ची समझ और भेद का। जब तक किसी को यह ज्ञान नहीं कि अन्तर में जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया है, वह सोग से बच नहीं हकता। मेरे पास लोगों के हररोज़ पत्र आते हैं। लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। स्वप्न में भी और जाग्रत में भी। ऐसे ही दूसरे गुरुओं का या राम और कृष्ण का रूप भी लोगों के अन्तर प्रकट होता है और लोग उसको सत्य मानते हैं इस लिए वे सोग से नहीं बचते और दुःखी हैं। जब आदमी को ज्ञान हो जाता है कि यह सब माया है तब वह सोग से बचता है। राम राम करने वालों को या पांच नाम का सुमरिन करने वालों को

नहीं बल्कि जो आदमी शरीर, मन और प्रकाश से परे आकर ज्ञान प्राप्त करता है उसको सोग नहीं व्याप्ता। अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे गुरु करते हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की क्या आवश्यकता थी। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी और मैं अपनी समझ के अनुसार बदल चला मगर मुझे दावा किसी चीज़ का नहीं है। आज मेरा मस्तिष्क ठीक है शायद कल को ठीक न रहे इस लिए किस बात का दावा करूँ। दाता फरमाते हैं :—

नाम का साधन किया जिसने उसे सब कुछ मिला।

नाम का साधन करने वाले को सब कुछ मिलता है यह ठीक है मगर नाम के भी दर्जे हैं। सहस दल कमल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न, भंवर गुफा और सत्लोक। असली नाम सत्लोक से आगे अलख अगम और अनाम में है। साधन करने वाले की विचार शक्ति बढ़ जाती है और फिर वह जो चाहता है वह हो जाता है। लेकिन विचार शक्ति तब बढ़ेगी जब तुम निचले दर्जों में राम, कृष्ण, गुरु या जिस का तुम्हारा जी चाहे ध्यान करोगे। इसका प्रमाण यह है कि मिस्मरेज्म वाले दीवार पर एक काला

निशान लगाकर उस पर अपनी दृष्टि जमाते हैं और आंख नहीं झपकते। जब वह निशान उनको फूल दिखाई देता है तो उस समय उनकी विचार शक्ति बढ़ जाती है। ऐसे ही हमको ध्यान दिया जाता है। ध्यान के समय अपने इष्ट की आंख और मस्तिस्क पर अपनी दृष्टि जमाओ। गोलाकार देखा करो। जब तुम्हारा ध्यान बढ़ जाएगा तो तुम्हारी विचार शक्ति भी बढ़ जाएगी। इससे तुम्हारी इच्छाएं पूरी होती रहेंगी।

मैं नाम क्यों नहीं देता? जीवों की वासनाएं ग़लत हैं और अभ्यास से उनकी बुरी वासनाएं और बढ़ जाती हैं, अगर उनको सत्संग नहीं मिला हुआ है तो अभ्यास करने से बजाए लाभ के उल्टी उनकी हानि हो जाएगी। इसी लिए तो मैं कहा करता हूं कि जिन्होंने जो भी आया उसको नाम दिया उन्होंने नाम नहीं दिया बल्कि उनको विष दिया है। नाम का अधिकारी कोई ही होता है। नाम से तो लाभ होना चाहिए लेकिन अनअधिकारी को नाम देने से उसकी हानि हो जाती है। इस लिए मैं किसी को नाम नहीं देता और सत्संग कराता हूं। ताकि लोगों को यह समझ आए कि हमने विचार कैसे रखने हैं। कई

आदमी आके कहते हैं कि बाबा जी, "मेरे लड़के के लिए यह कर दो। अरे भाई! सहायता तो उसकी होती है जो सहायता कराना चाहता है। अगर लड़के की इच्छा न हो तो काम कैसे बनेगा। लेकिन कई बार वह काम हो भी जाता है क्योंकि लड़कों की विचार शक्ति बढ़ी हुई नहीं होती। तुम देखते हो कि मिसमरेज़म करने वाले छोटे लड़कों का अपना महमूल बनाते हैं क्योंकि उनके अन्तर अपोज़ करने की शक्ति नहीं होती। अगर कोई मिसमरेज़म करने वाला मुझे अपना महमूल बनाना चाहे तो नहीं बना सकता।

नाम का साधन किया जिसने उसे सब कुछ मिला।
लाभदायक अब उसे क्या ज्ञान कर्म और योग है॥

अगर संसार का सुख चाहते हो तो अपनी विचार शक्ति को बढ़ाओ और यह ध्यान से बढ़ेगी। अगर प्रेम और विश्वास नहीं है तो ध्यान नहीं बनेगा। सन्तों ने जिज्ञासुओं को ऊँची बात नहीं बताई लेकिन मैंने भेद को खोल दिया। जो कुछ किसी को मिला वह उसको श्रद्धा और विश्वास का फल मिला और उसका क्रैडिट लिया। चेलों ने और हम ग्रहस्तियों ने गुरुओं के घर भर दिये। गुरु ने जो समझ दी है

अगर उसके बदले गुरु कुछ लेता है तब तो गुरु की कोई हानि नहीं होती मगर गुरु लोग तो दुनियां को सहाई वर्णन न करके और परदा रखकर उनसे धन लेते हैं। मैं किसी को धोखा देकर किसी से कुछ नहीं लेता। अपने लिए तो मे लेता नहीं। अगर हेराफेरी करके लोगों से धन लूंगा और उस धन को मन्दिर में लगाऊंगा तो वह पैसा मन्दिर को खा जायेगा। गुरु ज्ञान समझ और विवेक देता है। अगर तुम मुझे ज्ञानदाता समझ के पैसे दोगे तो मैं लेने को तैयार हूं और वह भी मन्दिर के लिए अपने लिए नहीं। अगर यह समझ के मुझे दोगे कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है और तुम्हारे काम कर जाता है तो क्योंकि मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई ज्ञान होता है इसलिए मैं उसे लेने के लिए तैयार नहीं हूं। दाता जी महाराज फरमाते हैं—

तीन तापों की है औषध राधास्वामी नाम
एक हजूर दाता दयाल जी महाराज क्योंकि राधा-स्वामी मत के थे इसलिए उन्होंने राधास्वामी कह दिया। राधास्वामी नाम की विशेषता क्या है ?

सुनो—

राधास्वामी नाम जो गावे सोई तरे।
कल क्लेश सब नाश सुख पावे सब दुःख हरे।
ऐसा नाम अपार कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार बहुर न जाने जनमई ॥

राधास्मामी नाम के जपने से तुमको दूसरा चोला नहीं मिलेगा। क्यों? मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरे अन्तर जितने रूप रंग और विचार पैदा होते हैं यह सब माया है अगर अन्त समय पर मुझे यह ज्ञान याद रहा और उस समय अगर कोई रंग रूप मेरे सामने आया तो मैं उसको माया समझ के छोड़ दूंगा और अपने असली रूप में चला जाऊंगा। मुझे इस बात का ज्ञान तो है मगर अभी तक पक्का नहीं हुआ और स्वप्न में कभी-कभी भूल जाता हूं। इसलिए कई बार मैं भी गिर जाता हूं। राधास्वामी नाम क्या है?

बैठक स्वामी अद्भुती राधा निरख विहार।
और न कोई लख सके शोभा अगम अपार ॥

वह नाम मन से नहीं जाता मुख से जपा जाता है। मैं जब मन से ऊपर चला जाता हूं तो

निचले दर्जे सब छोड़ जाता हूं और मुझे इन दर्जों का कोई ध्यान भी नहीं रहता । आज अभी मैं समाधि में था और बहुत देर से उठा हूं मुझे कोई ध्यान ही नहीं था । वह है राधास्वामी नाम मगर संसार को इसकी आवश्यकता नहीं । तुम बेशक राधास्वामी नाम न कहो सुरत शब्द कहलो या कोई भी नाम रख लो, ये नाम तो धर्मों और सम्प्रदायों ने अपने टैकनिकल शब्द धड़े हुए हैं। शब्द राधास्वामी भी एक बन्धन का कारण है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने श्री काशीनाथ मुखतार गोरखपुर वाले से कहा था कि मैं क्योंकि राधा-स्वामी मत का आचार्य हूं इसलिए मैं राधास्वामी शब्द कहने को विवश हूं। आप आज़ाद हैं बात को समझो और शब्दों के जाल में मत आओ।

मैं क्योंकि आजाद विचार हूं और किसी दिखावे आडम्बर या पंथ का पैरोकार नहीं। मैंने राधास्वामी मत से यह सच्चाई प्राप्त की है जो मैं वर्णन कर रहा हूं। आप देखो कि लड़के भिन्न-भिन्न कालेजों में पढ़ते हैं और बहुत सी किताबें भी कालेजों में भिन्न-भिन होती हैं लेकिन उनमें

से जो ज्ञान प्राप्त होता है वह है विधा। मैं आज़ाद विचारखाता हूं और किसी धर्म या पंथ की कैद में नहीं हूं। क्योंकि मुझे यह आज़ादी राधास्वामी पंथ से मिली है इसलिए जब तक मुझे जीवन की होश है मैं इस पंथ और इसके सिद्धान्तों के आगे सिर झुकाता रहूंगा और यही बात हजूर दाता दयाल जी महाराज अपने शब्दों में इस प्रकार फरमाया करते थे—

To born in a Church is blessing but to die in a Church is a curse.

(किसी धर्म में पैदा होना मुबारिक है लेकिन किसी धर्म में मर जाना गुनाह है)

धर्म और पंथ पाठशालायें हैं। इन पाठशालाओं से अनुभव और ज्ञान प्राप्त करो और उस ज्ञान और अनुभव से लाभ उठाओ, इस वास्ते लोग स्कूलों का मान करते हैं और अपने बच्चों को वहां भेजते हैं मगर स्वयं नहीं जाते, बस यही एक भेद है।

दुःख सतावे किसको, जब गुरु नाम का संयोग है ॥

गुरु नाम देता है, बिना गुरु के जो नाम जपते हैं,

उनकी हानि हो जाती है, गुरु नाम ही ज्ञान, समझ और विवेक का है, बाबा फकीर गुरु नहीं है। बाबे फकीर की बाणी गुरु है। जो कुछ इन गुरुओं ने कहा उस पर तो कोई चलता नहीं लेकिन होता क्या है ? गुरुओं के दिन मनाये जाते हैं. अमुक साल पैदा हुआ अमुक साल मर गया। उसने जीवन में यह किया और वह किया। इन बातों से तुम नाम को प्राप्त नहीं कर सकते। अगर वह स्कूल में जाकर पढ़ेगा नहीं और धन्य मास्टर जी धन मास्टर जी ही करता रहेगा तो क्या वह शिक्षा प्राप्त कर सकेगा ? नहीं। ऐसे ही अगर हम धन्य गुरु धन्य गुर करते रहेंगे और उसकी बात पर अमल नहीं करेंगे तो हमको क्या मिलेगा ? कुछ नहीं। गुरु को भोजन खिलाने से, रुपया पैसा देने से या उसका डेरा या मंदिर बनाने से अगर तुम यह आशा रखो कि तुम तर जाओगे तो यह बिलकुल ग़लत है। गुरु की बात पर अमल करने से तुम्हारा काम बनेगा, संसार मूर्ख बन के लुट गया।

मेल है जब नाम से तब सुख का मेला हो गया।
नाम ही हो भक्त का जीवन यह उसका भोग है॥

कौन से नाम से मेल हुआ ? जो मैंने बताया है। अगर वहां पहुंच जाओ तो फिर किसीके मरने से भी तुमको कोई दुख नहीं होगा। मुझे भेद मिल गया और मैं बात को समझ गया मगर मैं हर समय वहां ठहर नहीं सकता इस लिए मैं साधन करता हूं।

सन्त मत में दो प्रकार की भक्ति होती है एक गुरु-भक्ति और दूसरी नाम भक्ति। इस समय सत्संग में होते हुए तुम गुरुभक्ति कर रहे हो। अगर ध्यान से तुम गुरु की बात सुनो तो आधी भक्ति तो सत्संग में हो जाती हैं। अगर सत्संग में तुम ध्यान से गुरु की बात सुनते हो और गुरु के मुख को देखते हो तो गुरु के वचनों की धार की बदौलत तुम्हारी सुरत चढ़ जायेगी और प्रकाश और शब्द आ जायेगा। ये उसके श्रद्धा और विश्वास का परिणाम होता है। मेरे सत्संग में कई ऐसे केस हुए कि लोगों की सुरत चढ़ी। क्या मैंने कुछ किया ? नहीं, यह उनकी श्रद्धा और विश्वास का फल है। कई गुरु यह कहते हैं कि हम दूसरे को सुरत चढ़ा देते हैं। कई आदमी उनका टेस्ट करने के लिये गए मगर उनकी सुरत न चढ़ी। क्यों ? क्योंकि सुरत तो विश्वास और श्रद्धा से चढ़ती

है। गुरु लोग जीवों को कमरे में बैठाकर उनको नाम देते हैं और फिर थोड़ी देर अभ्यास में बैठा देते हैं फिर पूछते हैं कि क्या दिखाई दिया, जिसको कुछ दिखाई दिया वह हाथ खड़ा करो, जिनको कुछ दिखाई नहीं दिया वे दूसरों से भी हाथ को ज्यादा ऊंचा करते हैं। वे सोचते हैं कि अगर हम यह कहेंगे कि हमको कुछ दिखाई नहीं दिया तो लोग हमको नीच समझेंगे और गुरु महाराज कहेंगे कि तुम्हारे कर्म गन्दे हैं और हमको शर्म आयेगी।

अगर ध्यान से सत्संग किया जाये तो यह बहुत अच्छा अभ्यास हो जाता है। उस समय सुरत अपने आप चढ़ जाती है।

राधास्वामी नाम के सुमरिन में सिद्धि शक्ति है।
जोगी पूरी कर कमाई नाम ही का जोग है॥

सुरत का अपने आप में ठहर जाना ही नाम की प्राप्ति है। जब तक शरीर, मन, प्रकाश और शब्द को नहीं भूलोगे तुम वहाँ नहीं जा सकते। अन्तिम मंजिल अनामी धाम है वहां कोई रंग रूप नहीं है, वहाँ जाने के लिए पहले सत्संग करो फिर रूप का

ध्यान करो। तुम गृहस्थि हो, ध्यान ज़रूर किया करो मगर एक का करो। जिसका ध्यान करो उसको पूर्ण मानों और सब कुछ देने वाला मानो। उस रूप को अकालपुरष और आधार मानो तब तुम्हारा काम बनेगा। जिस इच्छा को लेकर ध्यान करोगे वह पूरी होगी। लोग मेरा ध्यान करते है, मुझ पर विश्वास करते हैं और उनके काम हो जाते हैं। लेकिन यह नहीं कि मैं उनके काम करता हूं। उनके प्रेम, विश्वास और श्रद्धा के कारण उनके काम हो जाते है और जिनमें प्रेम श्रद्धा और विश्वास नहीं है उनका न ध्यान बनता है और न ही उनके काम होते हैं। मैं नहीं कहता कि तुम राधा-स्वामी मत में आओ। मैंने तो तुमको गुर बता दिया। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके श्रद्धा और विश्वास से मिलता है। मैं किसी को बुरी बात नहीं कहता और न ही मैं किसी के लिए कुछ कर सकता हूँ।

न कुछ किया न कर सका, न करने योग शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर कबीर॥

ज्यादा विषय विकार के जीवन के कारण मन चंचल होता है और ध्यान जल्दी बनता नहीं

है। नाम और काम दोनों एक जगह नहीं रह सकते।

जहां काम तहां नाम नहीं, यहां नाम नहीं काम।
रवी रजनी दोउ न मिलें, इक ठाम इक याम।।

यह मेरा अपना अनुभव है। मैंने 1905 में नाम लिया और 1916 तक मुझे न प्रकाश आया और न शब्द केवल प्रेम ही प्रेम था। क्यों ? तेरह वर्ष की आयु में मेरा विवाह हो गया और सोलह वर्ष की आयु में गृहस्थ में आ गया। विषय विकार का जीवन था। अठारह वर्ष की आयु में नाम लिया। क्योंकि छोटी आयु का विवाह था और छोटी आयु में ही गृहस्थ में फंस गया तो फिर प्रकाश और शब्द कैसे आता ? इसलिए अपने बाल बच्चों का चरित्र बनाओ। उनके लिए नाम-दान यही है जो मैं कह रहा हूँ। मगर तुम स्वयं क्या करते हो और बच्चों को क्या उपदेश करोगे ? जिसको आर्थिक कठिनाईयें हैं और रोटी का प्रबन्ध नहीं उसको नाम क्या करेगा ? गृहस्थियों को सबसे पहले शारीरिक और मानसि ब्रह्मचर्य रखना आवश्यक है। अपनी आमदनी अनुसार खर्च करो

(Cut your coat according to your cloth) वरना दुःखी हो जाओगे और कोई नाम तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। अगर संसार में सुख से रहना चाहते हो तो अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से धोखा फरेब और हेराफेरी मत करो। किसी को अनुचित तंग न करो। यह मेरी समझ में आया है। आप लोग आ जाते हैं मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। नाम में सारे गुण हैं। जो आदमी आवागमन से बचने के लिए नाम जपता है वह संतान पैदा नहीं करेगा और अगर वह संतान पैदा करता है तो वह पाखण्डी है और उसको आवागमन का डर नहीं है। स्वयं तो गुरुओं के पास आवागमन से बचने के लिए जाता है और फिर संतान पैदा करके दूसरों को आवागमन में फंसाता है और दोहते और पोते चाहता है। यह उसका पाखण्ड नहीं तो और क्या है? सच्चे नामधारी का तो अपने आप ही परिवार नियोजन (Family Planning) हो जाता है। सन्त कहते है कि जन्म-मरण में आना ही पाप है।

जब किसी को यह विश्वास हो जाता है कि

मालिक एक तत्व है और बाकी सब माया है। तो उसकी किसी के साथ कोई शत्रुता नहीं रहेगी और अपने आप ही एकता हो जायेगी और फैमली प्लैनिंग (Family Planning) भी होगी। सन्तों के मार्ग में अपनी कमाई आप करके खाने की हिदायत है। इसलिए सन्तों के मार्ग में सारी बातें आ जाती हैं। जब ज्ञान हो गया कि मालिक एक तत्व है और वह सब में है और सबका है तो फिर न कोई हिन्दू है और न कोई मसलमान है। इसलिये अपने आप एकता होगी। सन्तमत से मेरा भाव सन्तमत के सिद्धान्तों से है। एक ही नाम में सब कुछ आ गया। सर्वसाधारण के लिए है सुमिरन और ध्यान।

तुम जिसका ध्यान करोगे उसकी आदतें और गुण तुम में आ जायेंगे। इसका प्रमाण देता हूँ। मंगलसेन का लड़का राधापति बसरेबगदाद में रहता था। वहाँ एक मकान के बारे लोगों का विचार था कि इसमें भूत रहते हैं। उस मकान को कोई किराये पर नहीं लेता था। राधापति और उसकी स्त्री ने यह सोचा कि हम राधास्वामी

मत के मानने वाले हैं भूत हमारा क्या करेंगे ? उन्होंने मामूली किराया पर मकान ले लिया और उसमें रहने लगे। लेकिन मन में डर तो था ही। प्रातःकाल राधापति की स्त्री ने मेरा ध्यान किया। मेरा रूप प्रकट हुआ और बताया कि मेरी स्त्री मर गई है। स्त्री ने राधापति को बताया, उसने अपने पिता जी को लिखा और मंगलसेन ने मुझे पत्र लिखा कि बसराबगदाद में अमुक तिथि को मेरी बहु को आपके रूप ने यह कहा है। मैंने उसे लिख दिला कि अमुक तिथि को मेरी स्त्री का स्वर्ग-वास हो गया है।

मैं अब सोचता हूँ कि मैं तो उस को कहने नहीं गया कि मेरी स्त्री मर गई है। उसको किसने बताया ? उसने मेरा ध्यान किया और उसके विचार की धार मेरे शरीर तक आई। क्योंकि मेरे अन्तर यह था कि मेरी स्त्री मर गई है इसलिए उस स्त्री को वही ज्ञात हुआ। जो आदमी धोखेबाज़ है उसका ध्यान करने से तुम में धोखा आयेगा, सचचाई नहीं आएगी। हाँ! अगर तुम उसको पूर्ण मानते हो और परमतत्व आधार मानते हो तब तुम में

सच्चाई आयेगी। अगर तुम उसको आदमी मानते हो तो आदमी में तो सैंकड़ों अवगुण और दोष होते हैं। उसका ध्यान करने से वही तुम में आयेंगे। इसलिए मैं कहता हूँ कि जिन गुरुओं और महात्माओं ने अपने निजी स्वार्थ के लिए और अपने डेरों के लिए गुरुआई की और सच्चाई नहीं बताई और लोगों को धोखा दिया उनका ध्यान करने से तुम में पवित्रता और सच्चाई नहीं आयेगी लेकिन अगर तुम उनको पूर्ण मानोगे तब ठीक है क्योंकि तुम्हारे ही श्रद्धा और विश्वास का फल तुमको मिलेगा। जैसे स्त्री तो एक है, एक आदमी उसको लड़की मानता है दूसरा उसको बहन मानता है, तीसरा उसको अपनी स्त्री समझता है और चौथा उसको अपनी माता समझता है। सबके अलग-अलग भाव उस स्त्री के लिए हैं अपने ही भाव का सबको फल मिलता है। सब तुम्हारे ही विश्वास का खेल है।

गुरु को मानुष जानते सो नर कहिए अन्ध।
दुःखी होयें संसार में आगे यम का फन्द॥
गुरु किया है देह को सत्गुर चिन्हा नाहीं।
कहें कबीर ता दास को तीन ताप भरमाईं॥

गुरु इष्ट है। क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास बैठ गया था और मैंने मालिक को उनके रूप में माना इस लिए मैं सफल हो गया। तुम किसी को भी गुरु प्रसिद्ध कर दो। लोगों के अन्तर उसका रूप प्रकट होने लग जायेगा। आरम्भ में उस मालिक को मानुष के रूप में मानना पड़ता है। गुरु नाम ज्ञान और समझ का है। हर एक व्यक्ति की प्रकृति जुदा है इसलिए सब के लिए एक नियम नहीं है। यह भेद गुरु और चेले में परम्परा से चला आ रहा है। जिस ढंग से शिष्य के मन की घड़त हो सकती है गुरु उसको वह बिधि बता देता है। उससे वह सफल हो जाता है। किताबों की हदायत काम नहीं आती।

सबको राधास्वामी

सूचना

आश्चर्य है, मुझे बाहर से पत्र आते हैं । कई तो उत्तर के लिये टिकट या जवाबी कार्ड नहीं भेजते, कई बैरंग और कई कम टिकटें लगाते हैं । ऐसे भाइयों के मन की हालत का पता लगता है कि कितनी कुर्बानी कर सकते हैं । प्रेम कुर्बानी मांगता है, बिना कुर्बानी कुछ नहीं मिलता, भविष्य में कोई बैरंग डाक नहीं छुडायेंगे। मंदिर ने प्रेस और बच्चों का स्कूल चलाया है तबसे तंगी हैं ।

सच्चाई की कौन कदर करता है ?

कबीर ने कहा है—

गोरस गलि गलि बिके मदिरा बैठ विकाय ।

यदि ऐसी ही दशा रही तो हस्पताल बन्द करना पड़ेगा ।

निवेदन

कई भाई हजूर परम दयाल जी महाराज से पत्र व्यवहार करते समय कुछ जन्म पत्रियां टेवे व प्रश्न लिख कर भेज देते हैं जोकि ज्योतिष से सबन्ध रखते हैं। मुफ्त में कर रहे थे और चाहते हैं कि उनको उत्तर दिया जाये। आजकल मुफ्त में कौन काम करता। श्री श्याम नारायण व्यास जोकि मन्दिर में ज्योतिष का काम करते हैं मन्दिर के कर्मचारी नहीं हैं। पिछले सात वर्षो से यह ज्योतिष सम्बन्धी सेवा मुफत में कर रहे थे। भविष्य में खर्च पत्र साथ निम्नलिखित भेजें—

साधारण पूछताछ—२ प्रश्न	२ रुपया
छोटा जन्मपत्र	११ रुपया
मझला जन्मपत्र ४ पेज फलादेश	३५ रुपया
सूक्ष्म फलादेश १० पेज फलादेश	१२१ रुपया
मकान दुकान के मुहूर्त तथा मिलान विवाह का	११ रुपया

संपादक
मानव मंदिर

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

प्यारे बाई ! राधा स्वामी

सच आखियां भांबड़ मचदाए-झूठ आखियां जिउड़ा जचदाए—(पंजाबी कहावत) अपने जीवन के अनुभव से कहता हूं—जब तक हम यानी इंसान बुद्धी से उस ईश्वर परमेश्वर खुदा या मालिके कुल को मानता है—अपनी अकल से उसकी स्तुति-प्रशंसा व मेहरबानियों के गुण गाता है—मैं उस मालिक को ज़ात मानता हूं—जिस तरह समुद्र की हिलोर आने में बूंदे हैं लहरें हैं मगर वे सब उसी (समुद्र) में समाई रहती हैं। इस समाने को क्या कहें ? इसी तरह उसकी तलाश बहम व भ्रम है—

दुनियां की जरूरतें पूरी करने की बजह से यह बहम पैदा हो जाता है—तुम जैसे उसको मानते हो मानो—आदमी की अकल काम नहीं करती व विश्वास नहीं बैठता। इसके लिये ही सत्संग की महिमा और गुरु चेले का व्यवहार है।

किताबों में खास खास ध्येय को रखकर महात्मा कुछ कहते हैं मगर सबके लिये नहीं होता। उस वक्त के हाल के अनुसार कुछ न कुछ कहा जाता है— सुनने वाले का विश्वास हो तो उसका काम पूरा भी होता रहता है।

फकीर

अपना कर्मभोग अथवा मौजमालिक

अब मैं 94 साल का होने वाला हूं पिछला सारा जीवन मेरे सामने आता है। राम को मिलने लिए चला था। राम का पता लगा अपने घर का भी अनुभव हुआ। प्रारब्धकर्म या मौज आधीन मजबूरन घसीटा जा रहा हूं।

जिन्दगी के अमली पहलू के तजर्बे के बाद ख्याल आया कि जब तक इन्सान का इखलाक व नीयत साफ नहीं वो किसी सूरत में रूहानियत अथवा अनुभव या सारभेद या शांति कहलो प्राप्त नहीं कर सकता। उस शिक्षा के लिए मानव मन्दिर की बुनियाद रखी थी कि सेंटर के बगैर गुजारा न था। ट्रस्ट के कानून के अनुसार जो दान यहाँ आता है वह उसी वर्ष में कुछ प्रतिशत रखकर सारा खर्च करना आवश्यक है। मौज या बदकिस्मति कहलो मेरी कि अमेरिका से रामदेव राव ने चोहत्तर हजार पांच सौ रुपया दान में भेजा। उसे खर्च करने के लिए इस वर्ष शिशु शिक्षा केन्द्र और छापा खाना खोले गये हैं शिशु शिक्षा केन्द्र में निर्धन बच्चे लिए जाते हैं और

उनसे कोई फीस नहीं ली जाती है। उनको वरदी भी दी जाती है। उनके माता पिता को लिखकर देना होता है कि वे तीन बच्चों से अधिक पैदा न करेंगे। लोगों ने ऐसा लिख दिया है। वे अपने वचन का पालन करेंगे या नहीं। इस विषय में कुछ कह नहीं सकता। जो मासिक पत्र व पुस्तकें ट्रस्ट छापते हैं उनका कोई मूल्य नहीं लिया जाता है। हमारी पुस्तकों का प्रकाशन पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीन भाषाओं में होता है। इस समय अंग्रेजी की निम्नलिखित किताबें हैं।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans.
2. A Word to Canadians.
3. Manvata the true religion.
4. Religious Reserch. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharma or True Religi...
Humanity.
10. Jeewan Mukti. 11. Art of happ...
12. Key to Freedom. 13. Broadca...
America.

पंजाबी ...

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ...
ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ ...
5. ਮਾਨਵ ...

विद्यार्थियों को मासिक सहायता दी जा रही है लगता है वह भी बंद करनी पड़ेगी।

मैंने सोचा था कि अगर सत्य से जो मैंने समझा है, जिसकी पुष्टी कबीर साहब व स्वामी जी ने भी की है और जो इस सनातन धर्म की ...
अनुसार ...

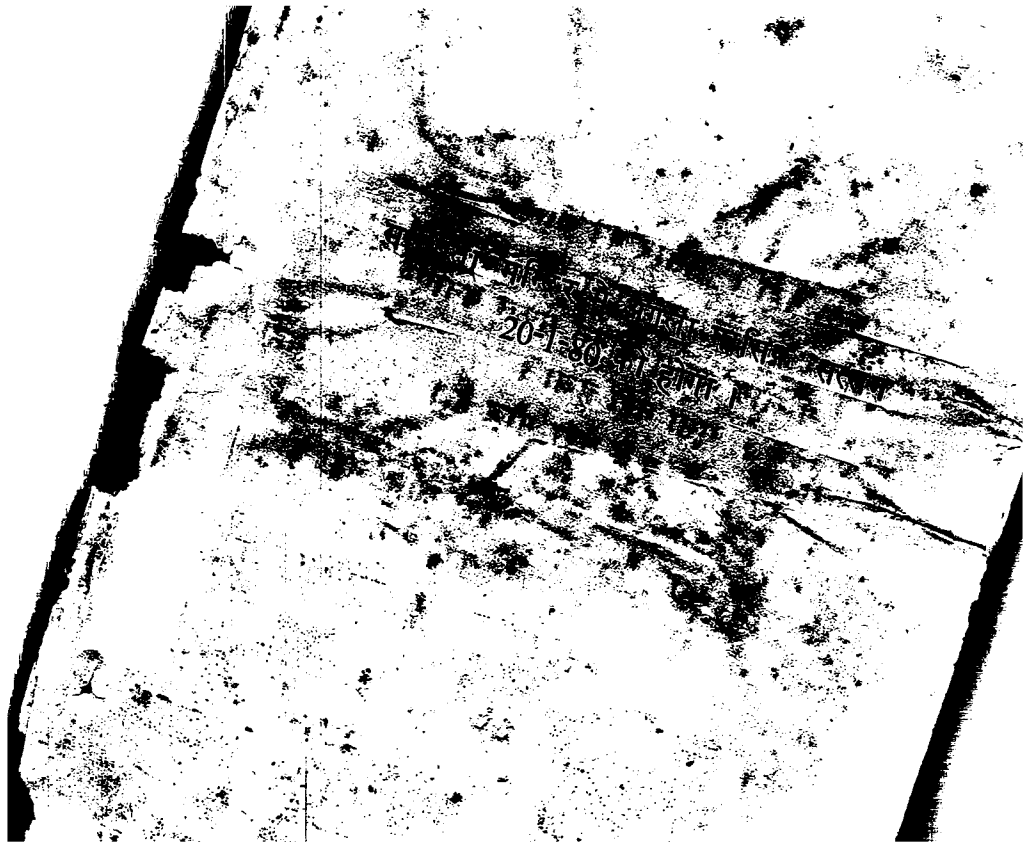

Regd. No. 26265/74 JANUARY 10th 1980
MANAV MANDIR NW—HSP—7.

ADDRESS

To

934 Shri Chilver Narsimulu
Muneem P.O. & Tq.
Banswoda Distt. Nizamabad
A.P.

From : MANAV MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR. Phone : 2022